त्रयोदशः पाठः



हिमालयः

[प्रस्तुत पाठ महाकवि कालिदास प्रणीत 'कुमारसम्भवम्' नामक महाकाव्य के प्रथम सर्ग से संगृहीत है। इन पद्यों में हिमालय की प्राकृतिक सुषमा का वर्णन है।]

सन्धिः

अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा हिमालयो नाम नगाधिराजः।
पूर्वापरौ तोयनिधी वगाह्य स्थितः पृथिव्या इव मानदण्डः ।।1।।

अनन्तरत्नप्रभवस्य यस्य हिमं न सौभाग्यविलोपि जातम्।
एको हि दोषो गुणसन्निपाते निमज्जतीन्दोः किरणेष्विवाङ्कः।।2।।

आमेखलं सञ्चरतां घनानां छायामधः सानुगतां निषेव्य।
उद्वेजिता वृष्टिभिराश्रयन्ते शृङ्गाणि यस्यातपवन्ति सिद्धाः ।।3।।

कपोलकण्डूः करिभिर्विनेतुं विघट्टितानां सरलद्रुमाणाम्।
यत्र स्रुतक्षीरतया प्रसूतः सानूनि गन्धः सुरभीकरोति ।।4।।

दिवाकराद्रक्षति यो गुहासु लीनं दिवाभीतमिवान्धकारम्।
क्षुद्रेऽपि नूनं शरणं प्रपन्ने ममत्वमुच्चैःशिरसां सतीव ।।5।।



शब्दार्थाः

नगाधिराजः (नग+अधिराजः)	–	पर्वतराज
पूर्वापरौ (पूर्व+अपरौ)	–	पूर्व और पश्चिम में स्थित (दोनों)
तोयनिधी	–	दोनों समुद्रों को
वगाह्य	–	प्रविष्ट होकर, धँस कर
मानदण्डः	–	मापक, पैमाना, नापने के लिए प्रयुक्त उपकरण
प्रभवस्य	–	उत्पन्न करने वाले का
सौभाग्यविलोपि	–	सौन्दर्य, महिमा, बड़प्पन को लुप्त करने वाला
सन्निपाते	–	इकट्ठा होने पर
निमज्जति	–	विलीन हो जाता है, नगण्य होता है
अङ्कः	–	कलंक, धब्बा
आमेखलम्	–	मध्य भाग तक
सञ्चरताम्	–	विचरण करते हुए
सानुगताम्	–	चोटियों पर गयी हुई
निषेव्य	–	सेवन करके, सुख पाकर
उद्वेजिता	–	घबराए हुए, परेशान
आश्रयन्ते	–	आश्रय लेते हैं
आतपवन्ति	–	धूप से युक्त पर
कपोलकण्डूः	–	कनपटी की खुजली

करिभिः	–	हाथियों के द्वारा
विनेतुम्	–	दूर करने के लिए
विघट्टितानाम्	–	रगड़े हुओं का
सरलद्रुमाणाम्	–	देवदारु के वृक्षों का
स्रुतक्षीरतया	–	दूध निकलने से
प्रसूतः	–	उत्पन्न
सानूनि	–	पर्वत की चोटियाँ
सुरभीकरोति	–	सुगन्धित कर देता है
गुहासु	–	गुफाओं में
लीनम्	–	छिपे हुए
दिवाभीतम्	–	दिन से डरे हुए, उल्लू
क्षुद्रेऽपि (क्षुद्रे+अपि)	–	अधम या नीच को भी
शरणं प्रपन्ने	–	शरण में आये हुए
ममत्वम्	–	अपनापन
सतीव (सति+इव)	–	मानों होने पर

अभ्यासः



1. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् एकपदेन उत्तराणि लिखत–**

(क) पृथिव्याः मानदण्डः कः?

(ख) हिमालयः भारतस्य कस्यां दिशि वर्तते?

(ग) इन्दोः किरणेषु कः निमज्जति?

(घ) कुमारसम्भवमहाकाव्यस्य रचयिता कः?

(ङ) हिमालयः गुहासु कं रक्षति?

2. अधोरेखाङ्कितेभ्यः पदेभ्यः प्रश्ननिर्माणं कुरुत–

(क) हिमालयः <u>उत्तरस्यां</u> दिशि वर्तते।

(ख) पृथिव्याः मानदण्डः <u>हिमालयः</u> अस्ति।

(ग) कुमारसम्भवमहाकाव्यं <u>कालिदासेन</u> विरचितम्।

(घ) अस्मिन् पाठे कविः <u>हिमालयस्य</u> वर्णनं करोति।

3. अधोलिखितेषु पदेषु सन्धिविच्छेदं कुरुत–

अस्त्युत्तरस्याम् = ... + ...

नगाधिराजः = ... + ...

पूर्वापरौ = ... + ...

किरणेष्विव = ... + ...

यस्यातपवन्ति = ... + ...

4. मञ्जूषातः शब्दान् चित्वा निर्दिष्टस्तम्भेषु लिखत–

नगाधिराजः	दिशि	इन्दोः	सिद्धाः	करिभिः
किरणैः	द्रुमाणाम्	स्नुतक्षीरतया	क्षुद्रे	छायायाम्
गुहासु	महाकाव्ये	शृङ्गाणि	विघट्टितानाम्	मानदण्डः
प्रभवस्य	यः	घनानाम्	वृष्टिभिः	कालिदासेन

	प्रथमाविभक्तिः	तृतीयाविभक्तिः	षष्ठीविभक्तिः	सप्तमीविभक्तिः
यथा–	यः	करिभिः	इन्दोः	गुहासु
	....	....	....	....
	....	....	....	....
	....	....	....	....
	....	....	....	....

5. अधोलिखितानि पदानि आधृत्य वाक्यानि रचयत-

पृथिव्याः – ....

हिमालये – ....

गुहासु – ....

इन्दोः – ....

छायायाम् – ....

योग्यता-विस्तारः

❖ 'मानदण्ड' शब्द मापने के लिये प्रयोग में लायी जाने वाली तराजू के लकड़ी के डण्डे को कहा जाता है। यह शब्द अब आदर्श कसौटी, निकष, पराकाष्ठा, श्रेष्ठता का पैमाना आदि अर्थों में प्रयुक्त होता है।

❖ 'पूर्वापरौ तोयनिधी' के माध्यम से यहाँ क्रमशः बंगाल की खाड़ी तथा अरबसागर की ओर संकेत किया गया है।

❖ 'सरलद्रुम' देवदारु के पेड़ को कहा जाता है। इसकी छाल बहुत कोमल होती है। घर्षणमात्र से ही इसकी छाल छिल जाती है तथा उससे दूध की धार बहने लगती है।

❖ हिमालय की महिमा का वर्णन दूसरे ग्रन्थों में भी प्राप्त होता है। तुलनीय-

कैलासो हिमवांश्चैव दक्षिणे वर्षपर्वतौ।
पूर्वपश्चिमगावेतावर्णवान्तरुपस्थितौ।। (*ब्रह्माण्डपुराणम्*)

❖ कालिदास द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्त के विरुद्ध में एक यह भी कथन पाया जाता है–

एको हि दोषो गुणसन्निपाते निमज्जतीन्दोरिति यो बभाषे।
न तेन दृष्टं कविना समस्तं दारिद्र्यमेकं गुणकोटिहारि॥

❖ सूक्ति का अर्थ है सुन्दर कथन। कालिदास के काव्य में बहुत ऐसी सूक्तियाँ हैं जिनसे मनुष्य को बहुत सी सीख मिलती है। नीचे दी गयी कुछ अन्य सूक्तियों का अध्ययन करें।

❖ कालिदास ने मेघदूत में रामगिरि पर्वत को ले कर लिखा है–

न क्षुद्रोऽपि प्रथमसुकृतापेक्षया संश्रयाय।
प्राप्ते मित्रे भवति विमुखः किं पुनर्यस्तथोच्चैः॥

कालिदास की अन्य प्रसिद्ध सूक्तियाँ

- शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्।
- न रत्नमन्विष्यति मृग्यते हि तत्।
- प्रियेषु सौभाग्यफला हि चारुता।
- पुराणमित्येव न साधु सर्वम्।
- रिक्तः सर्वो भवति हि लघुः पूर्णता गौरवाय।

परियोजना-कार्यम्

* इस पाठ में सूक्तियाँ खोजें।
* अन्य भाषाओं में प्राप्त हिमालय वर्णन को पढ़ें और उसकी सूची बनायें।